कुल पृष्ठ संख्या-24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) .....

.....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में .....

.....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 14/3/2020

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक | | . | | | |

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

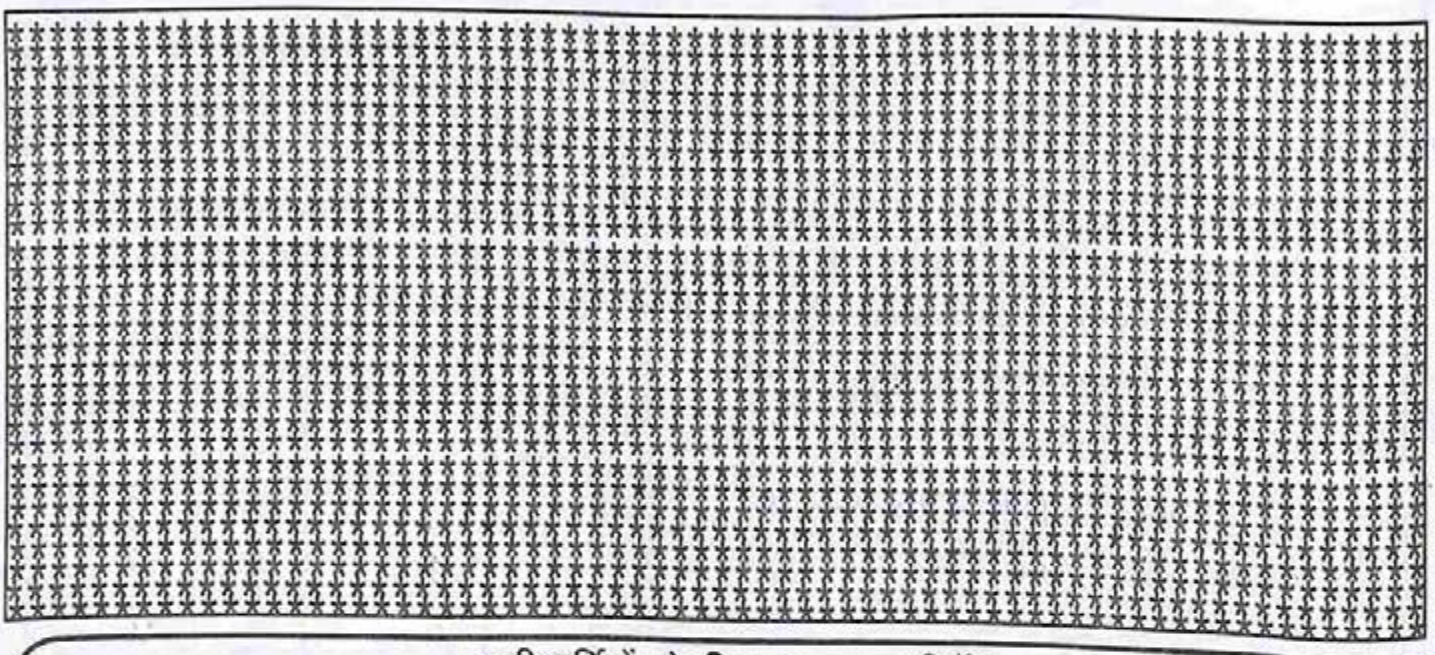

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

⇒ खण्ड-1

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है- 'सगुण एवं निर्गुण भक्ति'।

2. निर्गुण ब्रह्म निराकार और सर्वव्यापी माना जाता है।

3. निर्गुण एवं सगुण भक्त कवियों में कुछ इस प्रकार अन्तर है-
(i) सगुणोपासक भक्त कवियों का उद्देश्य हिन्दू समाज को विघटन व उत्पीड़न से बचाना था जबकि निर्गुणोपासक कवियों का उद्देश्य सम्पूर्ण भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोना था।
(ii) अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए सगुणोपासक भक्त कवियों ने समाज के विभिन्न घटकों को संगठित किया जबकि निर्गुणोपासक कवियों ने जातिगत भेद भुलाकर मानवता के उदात्त मूल्यों की स्थापना की।

4. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक है- 'जीवन की चाह पुरानी है, मरने की चाह नई साथी'।

5. शूलों की अर्थात् काँटो की राह अछूती रह जाती है। जीवन की संघर्षपूर्ण राह अछूती रहती है।

6. शूलों की राह को नई माना गया है अर्थात् संघर्ष के जीवन की राह नई है। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि जो मुश्किल राह पर चलता है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

वही जीवन में सफलता को प्राप्त होता है। संघर्षपूर्ण मार्ग पर चलने से ही हमें जीवनरूपी जवानी मिलती है। ऐसा व्यक्ति अपने लक्ष्य तक अवश्य पँहुचता है।

⇒ खण्ड-4

15. संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के सातवें पाठ से लिया गया है। इस पाठ का शीर्षक है 'अभी न होगा मेरा अन्त' व इस कविता के रचयिता 'सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी है।

प्रसंग- कवि निराला जी ने जैसा मृत्यु का साक्षात्कार अपने जीवन में किया था, शायद ही किसी ने किया होगा। उनका पूरा परिवार उनको छोड़कर मृत्यु को प्राप्त हो गया था। इस कविता में वे कहते है कि अभी उनका अन्त नहीं होगा। अभी तो उनका जीवनरूपी वसन्त ही शुरू हुआ है। इस प्रकार कवि ने अपने आत्मविश्वास, साहस व दृढ निश्चय का परिचय दिया है।

व्याख्या- महाकवि निराला कहते है कि अभी जो उनके जीवन में वसन्त रूपी जवानी आई है, यह उनके जीवन का प्रथम चरण है। अभी तो मृत्यु उनके जीवन से बहुत दूर है। अभी तो उनका सारा जीवन बचा पड़ा है। अभी तो उनके जीवन में यौवन की ऊर्जा का संचार हुआ है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कवि कहता है कि उसका मन अभी भी बालक के समान भोला व निर्मल है। कवि कह रहा है कि उसका बालक मन स्वर्ण रूपी किरणों की तरह है जो सागर की तरंगों पर बह रहा है। कवि कह रहा है कि कवि के ही अविकसित राग से अर्थात् मेरे ही आत्मविश्वास की धुन में मैं अपने भाईयों, मित्रों व सभी दिशाओं को भी विकसित कर दूँगा। मैं उन सब को बता दूंगा की मेरा अन्त अभी नहीं होने वाला है।

विशेष- (1) हिन्दी की शुद्ध खड़ी बोला का प्रयोग किया गया है।
(2) संस्कृत के तत्सम शब्दों का उपयोग किया गया है।
(3) प्रकृति का सुन्दर वर्णन भी दृष्टव्य है।
(4) अनुप्रास व रूपक अलंकार का प्रयोग दर्शनीय है।

---

16. संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के पन्द्रहवें पाठ से है जिसका शीर्षक 'आखिरी चट्टान' है। इस यात्रा वृत्तान्त के लेखक 'मोहन राकेश' है।

प्रसंग- जब लेखक कन्याकुमारी के मनोरम सूर्यास्त को देखता है, तो जिस प्रकार सूर्य ढलता रहता है, उसी प्रकार पानी का रंग बदलता रहता है। यहाँ उसी रंग बदलने का आकर्षक वर्णन मिलता है।

P. T. O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या- जब सूर्यास्त हो रहा था, तब लेखक मोहन राकेश उसे बड़े ध्यान से देख रहे थे। धीरे-धीरे सूर्य नीचे आ रहा था। जैसे ही सूर्य ने पानी की सतह को छुआ अर्थात् क्षितिज को छुआ तो पूरे सूर्य का प्रतिबिम्ब सागर में बन गया था। इस प्रतिबिम्ब के बनने से पूरा पानी सुनहरा रंग का हो गया। पानी का रंग इतनी जल्दी बदल रहा था कि रंग का नाम देना भी मुश्किल हो गया। पूरा पानी लावे के समान लग रहा था जिसमें सूर्य डूब रहा था। जब सूरज पूरा पानी के नीचे डूब गया तो वह सुनहरा रंगा लाल रंग मे परिवर्तित हो गया। अब ऐसा लग रहा था मानो लहू बह रहा हो। ऐसा इसलिए हो रहा था क्योंकि सूर्य के ढलने के बाद भी उसकी परावर्तित किरणें आ रही थी। जब सूर्य कुछ और नीचे डुबा तो हर जगह अँधेरा छाने लगा। इसलिए पानी भी बैंगनी रंग में होने लगा था। इसी के आगे पूरी तरह रात होने पर पानी काला पड़ गया था। तारों के सिवाय कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। तब लेखक ने लौटने की इच्छा से पीछे देखा।

विशेष- (1) हिन्दी भाषा के साथ अन्य भाषाओं के शब्द भी उपयोग किये गये है।
(2) भाषा विचारात्मक है व इस भाषा मे यात्रा के वर्णन की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है।
(3) लेखक ने सूर्यास्त को प्रकृति से जोड़कर सुन्दर वर्णन किया है। इसकी शैली सरल व आकर्षक है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

17 'झाँसी की रानी' कविता का मूलभाव

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित 'झाँसी की रानी' कविता बहुत ही प्रेरणादायी है। इसमें कवयित्री ने वर्णन किया है कि किस प्रकार रानी लक्ष्मीबाई बचपन में वीर व साहसी थी व रानी लक्ष्मीबाई के अंग्रेजों के साथ युद्ध का सजीव वर्णन भी किया है।

इस कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें सदैव वीर एवं साहसी रहना चाहिए। रानी लक्ष्मीबाई ने अपने जीवन की चिन्ता न करते हुए मात्र 23 वर्ष की उम्र में ही भारतभूमि के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था।

कवयित्री ने लक्ष्मीबाई की शौर्यगाथा में रानी को निडर एवं साहसी दर्शाया है। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें किसी भी शत्रु से कदापि नहीं डरना चाहिए व सदैव उसका साहस से सामना करना चाहिए।

एक अन्य शिक्षा जो हमें इस मनोरम कविता से मिलती है वह है कि हमें सदैव देश के प्रति सजग रहना चाहिए। हमें सच्चा देशभक्त होना चाहिए। यह कविता हमारे मन में देशभक्ति की भावना को जागृत करती है।

यह कविता हमें बताती है कि कोई भी बलिदान व्यर्थ नहीं जाता है। बलिदानी सदैव अमर रहते है। यह कविता हमें यह भी सिखाती है कि कोई भी काम असंभव नहीं होता है। यदि सब एकजुट होकर लड़ाई लड़ें तो अवश्य जीतते है। भारत को

P. T. O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

भले ही 1857 ई. में आजादी नहीं मिली परन्तु इसका परिणाम 1947 सन् की आजादी के रूप में प्राप्त हुआ था।
इस प्रकार यह कविता अपने मूलभाव से अनेक शिक्षाएँ देती है।

18. यह बात बिल्कुल सही है कि मुंशी प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। मुंशी प्रेमचन्द ने इस कहानी की रचना मे बालक के मन का चित्रण किया है। इस कहानी मे मुख्य पात्र हामिद है जो एक छोटा लड़का है व उसके अन्य मित्र - मोहसिन, महमूद, नूरे आदि है।
हामिद अन्य बच्चों की तरह आशावान है जबकि वास्तव मे उसके माता - पिता जीवित नहीं है। वह बहुत बड़ी- बड़ी चीजें सोचता है। बच्चों का मन भी कुछ इसी प्रकार का होता है। बच्चे हर हालत मे खुश रहते है।
बच्चों को हर कार्य मे जल्दी करने की भावना होती है। इसी भावना के चलते हामिद व उसके मित्र मैले मे जाने को बेचैन हो रहे है।
बच्चों की आदत होती है कि वे नई -नई रोचक व मनोरंजक कहानियाँ बना लेते है। वे मन के सच्चे होते है। इसी विशेषता के चलते प्रेमचंद ने बच्चों को एक - दूसरे को पुलिस व चोर की घटना, भूत - प्रेत व जिन्नात आदि की घटना का वर्णन करते है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बच्चों की सदैव यह खासियत होती है कि वे एक दूसरे से आगे निकलने की सोचते हैं। इसीलिए नूरे, महमूद व मोहसिन ने अपने खिलौने की जमकर बड़ाई की तो हामिद ने चिमटे के पक्ष में ऐसे तर्क दिए कि खिलौनों को झुकना पड़ा।
बच्चे थोड़े लालची भी होते हैं। इसी आधार पर हामिद के मित्रों ने उसे मिठाई व झूलों के नाम पर चिढ़ाया था।
इसी तरह बच्चे निश्छल भी होते हैं। वे वही बात मान लेते है जो उनको बताई जाती है। हामिद को बताया गया है कि उसके अब्बा धन कमाने गए है और अम्मी अल्लाह के द्वार गई है तो वह इन बातों को खुशी-खुशी मान लेता है व खुशी से रहता है।
इस प्रकार 'ईदगाह' कहानी बाल मनोविज्ञान को चरितार्थ करने वाली कहानी है।

19. सूरदास ने भ्रमरगीत का सुन्दर वर्णन किया है। मथुरा के कुओं को गोपियों ने अपने कृष्ण को लिखे गई पत्रों से भर दिया है। जब श्रीकृष्ण गोपियों को छोड़कर मथुरा चले गए तो गोपियां बहुत अकेला महसूस करती है। इसलिए उन्होंने कृष्ण को अनेक संदेश भेजे। परन्तु श्रीकृष्ण का कोई उत्तर नहीं मिला। इस बेचैनी में गोपियों ने इतने पत्र भेजे कि मथुरा के कुएँ भी पत्रों से भरे होंगे। पत्रों का उत्तर न मिलने का कारण गोपियों ने अपने अनेक तर्कों से दिया है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

20. कवि कृपाराम खिड़िया ने अपने नीतिगत सोरठों के माध्यम से 'राजहंस' पक्षी की विशेषता बताते हुए कहा है कि जब दूध और पानी एक साथ मिल जाता है तो उसको अलग करने की क्षमता सिर्फ राजहंस में ही होती है। राजहंस उस दूध व पानी के मिश्रण में से दूध को पी लेता है व पानी शेष बच जाता है।
अतः मूल भाव यह है कि विवेकी संतजन भी अच्छाई और बुराई को अलग कर देते है व अच्छाई व सच्चाई का मार्ग अपनाते है।

21. यहाँ अंशु-माली शब्द प्रभु के लिए आया है। वैसे देखा जाए तो अंशु माली का अर्थ है अंशु का माली - सूरज। परन्तु यहां इस कविता में जयशंकर प्रसाद प्रभु का संबोधन करते हुए कहते है कि प्रभु ही प्रकृति रूपी कमल के सूरज है।
जिस प्रकार सूरज की किरणों से ही कमल का विकास होता है उसी प्रकार प्रभु भी इस पूरे प्रकृति रूपी कमल का सूरज है। ईश्वर ही इस प्रकृति का स्वामी है।

23. रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने ईर्ष्या से बचने के उपाय अनेक महापुरुषों के द्वारा बताए है-
(i) हमें ईर्ष्या से बचने के लिए दूसरे की प्रगति को छोड़कर अपने विकास पर ध्यान देना चाहिए। ईर्ष्यालु व्यक्ति को अपनी उन्नति के साधन ढूंढने चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) यदि हमें ईर्ष्या से बचना है तो जो भी साधन व चीजे हमें ईश्वर ने उपलब्ध कराई हैं, उनसे ही संतोष कर हमें जीवन मे आगे बढते रहना चाहिए।
(iii) हमें दूसरे के उपकार को उपकार ही समझना चाहिए। हमें घमण्ड नहीं करना चाहिए। हमें किसी से भी घृणा नहीं रखनी चाहिए।
(iv) हमें सभी मानवों को समान समझना चाहिए। किसी को भी अधिक उन्नत या पतित नहीं लेना चाहिए।

22. सागरमल गोपा ने देश को आजाद कराने के लिए जवाहर लाल नेहरू, जयनारायण व्यास व ही रालाल शास्त्री को गुप्त पत्र लिखे थे। वह भारत भूमि को स्वतन्त्रता दिलाना चाहता था। उसने जैसलमेर के महाराजा के विरुद्ध आवाज उठाई थी।
एक अन्य कारण यह था कि उसने दो पुस्तके लिखी थी जिनका नाम था-
(i) जैसलमेर राज्य का गुण्डा शासन
(ii) रघुनाथ सिंह का मुकदमा
इन सब कारणों के चलते उसे बन्दी बनाया गया था।

24. लोकसंत पीपा निर्गुण - निराकार भक्ति करते थे। उनके मत के अनुसार ईश्वर का कोई रूप नहीं होता है। एक ही ब्रह्म होता है वही परमात्मा हमारे शरीर में व सबके शरीर में निवास करता है। पूरी पूजन सामग्री भी शरीर मे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ही निवास करती है। हमें ईश्वर को कहीं भी खोजने की आवश्यकता नहीं होती है। ईश्वर का अस्तित्व हमारे शरीर के कण-कण व हर रग में समाहित होता है।
इस प्रकार संत पीपा इस [redacted] पूरे ब्रह्माण्ड व परम ब्रह्म को ही शरीर में स्थित मानते है।

25. प्रस्तुत वर्णन कविता के रचयिता 'कवि सेनापति' है। इन्होंने शृंगार रस व श्लेष अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है।

26. कवि देव के आराध्य भगवान श्री कृष्ण है। ऐसे उनके द्वारा लिखे गये कवित्तों से पता चलता है।

27. हामिद ने मेले में चिमटा खरीदा था। दुकानदार से पूछने पर चिमटे की कीमत 6 पैसे बताई गई थी। परन्तु हामिद ने अपनी चतुराई से उसे 3 पैसे में खरीद लिया था।

28. 'आखिरी चट्टान' पाठ में कवि लेखक 'मोहन राकेश' द्वारा कन्याकुमारी को ही सूर्योदय व सूर्यास्त की भूमि बताया गया है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

29. (i) कवि परिचय : महाकवि तुलसीदास

→ जन्म - विक्रम संवत् 1589
→ मृत्यु - विक्रम संवत् 1680
→ ऐसा बताया जाता है कि अभुक्त मूल नक्षत्र में पैदा होने से इनके माता पिता ने इन्हें छोड़ दिया व मुनिया नामक दासी ने इनका पालन किया।
→ इनके गुरू का नाम नरहरिदास बताया जाता है।
→ इन्होंने अपने साहित्य सृजन के लिए मुख्यतः ब्रज व अवधी भाषा का प्रयोग किया है।
→ ये रामभक्त थे और इन्होंने राम जी के चरित्र का वर्णन अपने दोहों में किया है।
→ इनकी प्रमुख रचना 'रामचरितमानस' है।
→ इनकी अन्य कृतियां हैं -
जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, रामलला नहछू, गीतावली, दोहावली, कवितावली, बरवै रामायण आदि।

(ii) लेखक परिचय : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

→ इनका जन्म सन् 1850 में हुआ।
→ इनका जन्म काशी में हुआ।
→ इनका असामयिक निधन सन् 1885 में 35 वर्ष की आयु में हुआ था।
→ इन्होंने कम आयु में ही लेखन कार्य शुरू कर दिया था। इनके 172 ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों में से बहुत सारे तो अनुवाद ही हैं।
→ इन्होंने शुद्ध खड़ी बोली हिन्दी व पौराणिक हिन्दी के मिश्रण की भाषा तैयार की व उसमें

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रचनाएँ भी की।
→ इन्होंने नए गद्य विधा की रचना शुरू की थी।
→ इन्होंने अपने समकालिन कवियों एवं लेखकों का मार्ग दर्शन किया था।
→ इनकी प्रमुख रचनाएँ है-
नीलदेवी, मुद्राराक्षस, सत्य हरिश्चन्द्र व अन्य पौराणिक ग्रन्थों के अनुवाद।

30. शराब का सेवन हर तरह से हानिकारक साबित हो सकता है। इसके कुछ दुष्प्रभाव निम्नलिखित दिये गए है-
(i) शराब के सेवन से चालक का मास्तिष्क तुरंत प्रतिक्रिया नहीं कर पाता है।
(ii) ऐसी स्थिति में चालक गति, दूरी, नाप व समय आदि का पता नहीं लगा पाता है।
(iii) शराब के सेवन से शारीरिक अंग प्रतिक्रिया करने मे अधिक समय लगाते है।
(iv) इसके अलावा चालक ड्राइविंग पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता है व उसकी आँखो में नींद भरी हुई होती है।
यदि हमारा कोई दोस्त या रिश्तेदार ऐसा करता है तो हम उसको शराब पीकर गाड़ी नहीं चलाने देंगे या कोई दूसरा चालक उपलब्ध करवाएँगे।
हम उसे शराब पीकर वाहन चलाने के दुष्प्रभाव बताएँगे व उसको इस कार्य को कभी भी न करने के लिए बोलेंगे।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

यदि फिर भी वह नहीं माने तो हम उसके खिलाफ कानूनी कार्यवाही करेंगे।
इस प्रकार हम जो कुछ कर सकते है, वो करेंगे।

खण्ड - 3

9. विशेषण की परिभाषा - जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने का कार्य करते है, उनको विशेषण कहते है।
ये शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते है।
जैसे -
यह पुस्तक गुलाबी है।
ताजमहल बहुत सुन्दर है।
विशेषण मुख्यतः पाँच प्रकार के होते है -
उसके दो प्रकार है।
(i) गुणवाचक विशेषण
(ii) संख्यावाचक विशेषण

10. इस वाक्य में प्रशान्त में कर्त्ता कारक है।
रहा है से पता चला कि वर्तमान काल है।
वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता है। इसलिए कर्तृवाच्य है।

11. द्वन्द्व समास - जिस समास में दोनो पद ही प्रधान होते है व उनका विग्रह करने के पश्चात 'और' शब्द लगता है, वहाँ द्वन्द्व समास होता है।
द्वन्द्व समास में जब दोनों पदो को जोड़ा जाता है तो बीच में '-' चिह्न लगता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जैसे -
दिन-रात ⇒ दिन और रात
राम - कृष्ण ⇒ राम और कृष्ण

12. (क) रमेश की अक्ल मारी गई है।
(ख) घर में सब कुशल है।

13. (क) आसमान सिर पर उठाना
अर्थ- बहुत शोर मचाना

(ख) ओखली में सिर देना
अर्थ- स्वयं को मुसीबत में डालना

14. इस लोकोक्ति का अर्थ है-
'अपनी क्षमता से अधिक बड़ी बात कहना'।

खण्ड - 2

8.

पुस्तकें मँगवाने हेतु पत्र

(पत्र अगले पृष्ठ पर शुरू है।)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

पत्रांक - म. प्रा. दे./4617/2020
दिनांक - 14.03.2020

प्रेषक -
महावीर प्रकाशन
देवास

प्रेषिति -
मुख्य विक्रेता
मोहन राघव प्रकाशन
नई-दिल्ली

विषय - कुछ पुस्तकें मँगवाने हेतु व्यावसायिक-पत्र।

मान्यवर,
विनती है कि आपके प्रकाशन से हमें कुछ पुस्तकों की आवश्यकता है। हम सदैव आपके प्रकाशन से ही पुस्तकें मँगवाते है और इस बार भी हम आपके ही प्रकाशन से पुस्तकें मँगवाना चाहते है। इन पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है-

1. अभिज्ञान शाकुन्तलम् - 5 प्रतियाँ
2. रामचरितमानस - 2 प्रतियाँ
3. सामान्य ज्ञान (भारत) - 8 प्रतियाँ
4. अंग्रेजी व्याकरण - 3 प्रतियाँ

आशा है कि आप जल्द से जल्द इन पुस्तकों को भिजवाने का कार्य करेंगे। साथ ही निवेदन है कि कुल मूल्य भी आप हमें सूचित कर दें ताकि हम भुगतान कर सकें।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

धन्यवाद!
भवदीय
पुस्तक विक्रेता
ओमवीर

7. निबन्ध - पर्यावरण प्रदूषण

संकेत बिन्दु-
(i) प्रस्तावना: पर्यावरण प्रदूषण से तात्पर्य
(ii) पर्यावरण प्रदूषण के कारण
(iii) पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार
(iv) उपसंहार: रोकने के उपाय

1. प्रस्तावना: पर्यावरण प्रदूषण से तात्पर्य
प्रदूषण का अर्थ होता है दूषित करना। अतः पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ हुआ कि पर्यावरण को अनेक स्रोतों के द्वारा दूषित किया जाना। इसी प्रक्रिया को पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है। आज पर्यावरण प्रदूषण अपने उच्च स्तर पर है। हमारा भारत देश भी उन्हीं देशों में से है जो सर्वाधिक पर्यावरण प्रदूषण की भयंकर मुसीबत से गुजर रहा है।
भारत की जनसंख्या अधिक होने से यहाँ का प्रदूषक भी अधिक है व अधिक - से - अधिक बढ़ता ही जा रहा है।
इस प्रदूषण के दुष्परि दुष्परिणाम यह निकल रहे है कि ओजोन की परत धीरे- धीरे कम

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

होती जा रही है जिससे सूर्य की हानिकारण किरणे पृथ्वी पर पहुँचकर मनुष्यों को हानि पहुँचाएगी। इसी तरह हरित गैसों का प्रभाव भी है जो पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ा रहा है। इसे 'वैश्विक तापन' कहा जाता है। इसी प्रकार पर्यावरण प्रदूषण के कई अन्य गंभीर प्रभाव भी है।
अतः हम कह सकते है कि प्रकृति को हानि पहुँचाते हुए प्रकृति को दूषित करना व इसका शोषण व हनन करना ही पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है।

2. पर्यावरण प्रदूषण के कारण
पर्यावरण प्रदूषण के अनेक कारण है इसी के साथ इसके अनेक दुष्प्रभाव भी है। पर्यावरण प्रदूषण के मुख्यतः तीन कारण है जो इस प्रकार दिये गए है-

(i) आम जनता व नागरिक - आम जनता व नागरिक प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है। आम जनमा प्लास्टिक की थैलियां व अन्य अपशिष्ट पदार्थ जलाते है तो वह हवा में उड़ कर प्रदूषित करता है। इसी प्रकार कीटनाशक आदि हानिकारण रसायन भी हवा व पानी को दूषित करते है।
हर नागरिक किसी विशेष अवसर पर लाउड स्पीकरों का प्रयोग करता है जो ध्वनि प्रदूषण को बढ़ावा देता है। आज मानव द्वारा ठोस निकासी प्रबंधन के साधन नहीं है जिससे हर जगह कचरा फैल जाता है व पानी प्रदूषित होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) वाहन - यह भी प्रदूषण में अपना योगदान देता है। वाहनों के चलाने से जहरीली वायु व गैस निकलती है जो हमें श्वास संबंधी विकार पैदा कर सकती है।
इसी प्रकार वाहन बेमतलब से हॉर्न बजाते रहते है जो ध्वनि प्रदूषण बढता है व हर व्यक्ति में तनाव व सिरदर्द उत्पन्न कर देता है।

(iii) उद्योग व फैक्टरी - यह भी प्रदूषण का मुख्य कारण है। इससे उत्पादन के पश्चात बहुत ही हानिकारक व जहरीली वायु निकलती है जो वायु को प्रदूषित करती है।
इसी प्रकार इससे हानिकारण रसायन बहा दिये जाते है जो जल में मिलकर एक तो जल को प्रदूषित करते है और जल के जीवों को मरना भी पडता है।
एक अन्य दुष्प्रभाव इसका यह है कि ये बहुत ही बुरी और तेज ध्वनि निकालती है जिससे आसपास के मानवो का जीना भी दूभर हो जाता है।

3. पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार
पर्यावरण प्रदूषण मुख्यतः तीन प्रकार के होते है व इनके भी हानिकारक दुष्प्रभाव होते है जो कुछ इस प्रकार है-

(i) वायु प्रदूषण - यह सबसे खतरनाक प्रदूषण होता है। पृथ्वी के वातावरण की वायु को

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

दूषित करना ही वायु प्रदूषण कहलाता है। जब जहरीली वायु ऊपर पहुँच जाती है और वातावरण में मिल जाती है। तो जब वर्षाकाल आता है और वर्षा होती है तो वर्षा और जहरीली वायु मिलकर अम्ल बना लेते है। इसे 'अम्ल वर्षा' कहते है। इसके दुष्प्रभाव हमने ताजमहल पर व मिट्टी की उत्पादकता पर देखने को मिले है।

(ii) जल प्रदूषण - यह एक अन्य प्रकार का प्रदूषण है जिसमें पेय जल को दूषित कर दिया जाता है। पेय जल अम्ल वर्षा से भी दूषित हो जाता है। पेय जल का दूषित करना उद्योग के द्वारा किया जाता है। उद्योग से निकले हानिकारक रसायन से जल अपना पेय गुण खो देता है व जहरीला बन जाता है। आज मानव जल में अपने कचरे को डालकर दूषित कर रहा है इससे यह दुष्प्रभाव पड़ रहा है कि जल के सभी जीव मर रहे है व इसी प्रदूषित जल को पीने से खुद मानव को असाधारण बीमारियाँ हो रही है।

(iii) ध्वनि प्रदूषण - ध्वनि का प्रदूषण ही ध्वनि प्रदूषण कहलाता है। जब ध्वनि जरूरत से ज्यादा तीव्रता की होती है तो वह ध्वनि प्रदूषण कहलाता है। ध्वनि प्रदूषण के गंभीर प्रभाव हम आज हर इंसान में देख सकते है। ध्वनि प्रदूषण से आज मानव चिंताग्रस्त, तनावपूर्ण जीवन जी रहा है। उसके सुनने की

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

क्षमता भी कम हो रही है। वह किसी भी काम में ध्यान नहीं लगा पाता है। उसका रक्तचाप बढ रहा है या घट रहा है।

इस प्रकार ये तीन प्रकार के प्रदूषण मुख्य थे। इसके अलावा मृदा प्रदूषण भी एक अन्य तरह का प्रदूषण है।

4- <u>उपसंहार: रोकने के उपाय</u>

आज इस लगातार बढते प्रदूषण को रोकना बहुत मुश्किल हो गया है। हमें इसे अयंकर समस्या से जल्द से जल्द छुटकारा पाना चाहिए इसके लिए हमें अनेक प्रयास करने चाहिए।

→ हमें लोगों को जागरूक बनाना चाहिए कि वे प्रदूषण को रोकने में मदद करें।

→ हमें लोगों को प्रदूषण के दुष्प्रभाव बताने चाहिए ताकि वे आगे के समय के प्रति सजग हो जाए।

→ प्रदूषण के उपाय केवल नागरिकों द्वारा ही संभव नहीं है बल्कि सरकार को भी इसमें अपना योगदान देना चाहिए।
सरकार को भी प्रदूषण पर नियंत्रण पाने के लिए कठोर व सख्त नियम बनाने चाहिए व उनको सख्तियत से लागू भी करना चाहिए सरकार को उद्योग व वाहनों के बारे में समाधान ढूँढने चाहिए।
इस प्रकार हम प्रदूषण को रोक सकते है।

→

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सभी देशों को प्रदूषण को रोकने के लिए एकजुट हो जाना चाहिए।
नागरिकों को भी सरकार का पूरा सहयोग करना चाहिए।
केवल सभी के एकजुट होने से, सरकार व नागरिकों के सहयोग, हर तरफ जागरूकता व शिक्षा के प्रसार से हम प्रदूषण को रोक सकते है।
नागरिकों के प्रति कठोर नियम भी बनाने जाने चाहिए।
शिक्षा प्रदूषण को रोकने में एक महत्त्वपूर्ण साधन है। शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो प्रदूषण को रोकने का दम रखती है।
इस प्रकार हमें उपर्युक्त उपायों को अपनाना चाहिए।

"प्रदूषण रोको, जीवन बचाओ"

समाप्त

The End

ISER-16/2019